उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH

निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005

Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांकः428 / एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉकः 12–06–2025

दिनांक :12 जून, 2025 **समय : 12:00 बजे**

स्थान : उपकार सभाकक्ष **उपस्थितिः संलग्न**

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की छठवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2025–26 की छठवीं बैठक, डा. विनोद कुमार तिवारी, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 12 जून, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक व मौसम वैज्ञानिक; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; वन विभाग; कृषि विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग; राहत आयुक्त लखनऊ के वैज्ञानिकों तथा उपकार के वैज्ञानिकों / अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में विचार–विमर्श उपरांत मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये गयेः–

- सप्ताह के आरंम्भिक चरण में 13 जून तक मौसमी सक्रियता तराई क्षेत्रों तक सीमित रहने के कारण तापमान में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होने से प्रदेश में जारी लू एवं ऊष्ण रात्रि की स्थितियॉ 13 जून तक जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 14 जून तक जारी रहने की संभावना है। तदोपरांत प्रदेश में तड़ित झंझावात एवं वज्रपात के साथ वर्षा गतिविधियों में बढ़ोत्तरी होने की संभावना है।
- अचानक बाढ़ग्रस्त्र क्षेत्रों के लिए धान की किस्मों यथा आई.आर. 64–सब 1 (पकने की अवधि 110 दिन) एवं सॉभा महसूरी–सब 1 (पकने की अवधि 145 दिन) के बीज का प्रयोग करें।
- धान की नर्सरी में पानी का तापमान बढ़ने पर क्यारी से पानी को निकालकर पुनः सिंचाई करें, सिंचाई यथासंभव सायंकाल में ही करें।
- धान की नर्सरी हेतु शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज शोधित न हो तो बीज शोधन हेतु स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 90 प्रतिशत+टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत की 4 ग्रा. मात्रा को 25 कि.ग्रा. बीज की दर से बीज शोधन कर बुवाई करें।
- सीमित संसाधन होने के बावजूद कृषक फास्फेटिक उर्वरक व जैविक खादों को प्रयोग अवश्य करें ताकि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी फसल को हानि कम से कम हो।
- रोपाई वाले खेत में 1 फीट ऊॅची मेढ़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।
- फलों में परिपक्वता आने पर प्रातः अथवा सायंकाल फलों की 8–10 मि.ली. डंठल सहित तुड़ाई की जानी चाहिए। फलों को प्रातः तथा अपरान्ह तोड़ें जिससे उन्हें फील्ड हीट (दोपहर की गर्मी) से बचा कर भण्डारण अवधि को बढ़ाया जा सके।
- फलों की भण्डारण क्षमता बढ़ाने हेतु तुड़ाई पूर्व चौसा किस्म तथा अन्य देर से पकने वाले किस्मों के लिए 10 दिनों के अन्तराल पर तीन छिड़काव डाइहाइड्रेटेड कैल्शियम क्लोराइड (221ग्रा0 / 10ली0 पानी) का करें।
- हल्दी बीज की बुवाई जून माह में पूर्ण कर लें।
- प्रायः यह प्रकाश में आता है कि गर्मी के मौसम में पशुपालक चरी की बुआई करते हैं चूंकि भूमि में नमी की मात्रा कम होने के कारण बोई गई चरी की जड़ों में HCN की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे पशुओं की उक्त प्रकार की चरी को खिलाने पर HCN Poisoning होने की सम्भावना प्रबल होती है, जिससे पशुओं की मृत्यु भी हो सकती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि गर्मी के मौसम की चरी फसल में पर्याप्त मात्रा में नमी बनाये रखने हेतु आवश्यकतानुसार सिंचाई करें एवं चरी की कटाई भूमि से 4–5 इंच ऊपर काटकर ही पशुओं को खिलायें।
- मत्स्य बीज परिवहन दिन के कम तापमान वाले समय में करें।
- मौसम खराब रहने यानि अत्यधिक गर्मी, आद्रता, वर्षा रहने पर मत्स्य भोजन का प्रयोग आधा कर दें।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (12–19 जून, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह प्रदेश के पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से (2 से 4 डिग्री से.) अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य के आस–पास या सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री से.) अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई, उत्तर–पूर्वी मैदानी, पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री से.; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तर–पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री से.; दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 42 से 45 डिग्री से.; जबकि प्रदेश के शेष कृषि जलवायु अंचलों में यह 40 से 42 डिग्री से. रहने की संभावना है।

प्रदेश के दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से (1 से 3 डिग्री से.) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 24 से 26 डिग्री से.; दक्षिणी–पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 28 से 30 डिग्री से. तथा अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 26 से 28 डिग्री से. रहने की संभावना है।

धान की खेती

- धान की सीधी बुआई ड्रम सीडर द्वारा करें।
- 20 से 25 दिन वाली धान की पौध की रोपाई 2 से 3 पौधा प्रति हिल 3 से 4 से.मी. की गहराई तक करें।
- सुगन्धित धान की किस्मों की नर्सरी डालें।
- सुगन्धित धान के लिए पूसा नरेन्द्र कालानमक–1, पूसा सी.आर.डी.कालानमक–2, पूसा–1637, एच.यू.आर.–1309, कस्तूरी, मालवीय सुगंध धान–1, एच.यू.आर.–1304 एवं नरेन्द्र लालमती धान के बीज को प्रयोग करें।
- धान की **कम अवधि** की उन्नत किस्मों सी.ओ.–51, नरेन्द्र–80, आई.आर.–50, नरेन्द्र–97, पंत धान–12, बारानी दीप, शुष्क सम्राट, नरेन्द्र लालमती, मालवीय धान–2, मालवीय धान–917, शियाट्स धान–5 तथा **मध्यम अवधि** की किस्मों नरेन्द्र–359, पंत धान–10, मालवीय धान–1, एन.डी.आर.–9930111, सीता, सरजू–52, पंत धान–4, शियाट्स धान–1, शियाट्स धान–2, शियाट्स धान–4, आई.आर.–64 सब–1, नरेन्द्र धान–2065, नरेन्द्र धान–3112–1, मालवीय धान–36 की नर्सरी डालें।
- **ऊसर क्षेत्रों** हेतु धान की मध्यम अवधि की किस्मों सी.एस.आर.–10, सी.एस.आर.–43, सी.एस.आर.–13, सी.एस.आर.–36, सी.एस.आर.–46, सी.एस.आर.–60, नरेन्द्र ऊसर धान–2009 की नर्सरी डालें।
- नर्सरी में जिंक की कमी के कारण होने वाले खैरा रोग जिसमें पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं बाद में कत्थई रंग के धब्बे पड़ जाते है, लक्षण दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल के साथ अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी के घोल के साथ छिड़काव करें।
- नर्सरी में लौह तत्व की कमी के कारण होने वाले सफेदा रोग, जिसमें पत्तियां कागज के समान सफेद रंग की निकलती है, के नियंत्रण हेतु 5 कि.ग्रा. फेरस सल्फेट को 2 प्रतिशत यूरिया के घोल अथवा 2.5 कि.ग्रा. बुझे चूने को प्रति हे. लगभग 1000 लीटर पानी घोल के साथ छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत प्रजाति पारस (पी.ए.–291), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु पूसा अरहर–16, सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992, पी.ए.–6, पी.ए.–7, पूसा–2018–4 की बुवाई यथाशीघ्र समाप्त करें।

- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

श्री अन्न की खेती

- सावां की प्रजाति टी–46, आई.पी.–149, यू.पी.टी.–8, आई.पी.एम.–97, आई.पी.एम.–100, डी.एच.बी.एम. –93–3, डी.एच.बी.एम.–33–3 की बुआई करें।
- कोंदो की प्रजाति जे.के.–6, जे.के.–62, जे.के.–2, ए.पी.के.–1, जे.पी.वी.के.–3 की बुआई करें।
- कोंदो में बीज जनित रोग अरगट की रोकथाम हेतु बीज को बोने से पहले 20 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर तुरंत अरगट से ग्रसित बीजों को अलग कर दें तथा शुद्ध पानी से 4 से 5 बार धोकर बीज का प्रयोग करें।

मक्का की खेती

- खरीफ मक्का की देर से पकने वाली (95 दिन से अधिक) किस्मों यथा; एच.क्यू.पी.एम.–4, एच.एम.एच. –3904, पी.एम.एच.–3, एच.क्यू.पी.एम.स.–5, एन.के.–61, एच.क्यू.पी.एम.–1, सीड टेक–2324 तथा बुलंद आदि यथाशीघ्र समाप्त करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बोने से पूर्व 1 किग्रा0 बीज को 4–6 ग्रा0 ट्राइकोडर्मा प्रति किग्रा0 बीज अथवा 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करें।
- प्रदेश की जलवायु मक्के में फॉल आर्मी वर्म के लिये अनुकूल है। इस कीट की प्रथम अवस्था सूंडी (लार्वा) सर्वाधिक हानिकारक होती है। इसके जैविक नियंत्रण हेतु एन.पी.वी. 250 एल.ई. अथवा मेटाराइजियम एनिप्सोली 5 ग्रा. प्रति ली. अथवा बैसिलस थुरिनजैनेसिस 2 ग्रा. प्रति ली. की दर से प्रयोग करना लाभकारी होता है।

तिल की खेती

- तिल की उन्नतशील किस्मों यथा गुजरात तिल–6, आर.टी.–346, आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर टाइप–78, टाइप–13, टाइप–4 व टाइप–12, एम.टी.–2013–3 व बी.यू.ए.टी. तिल–1 की बुवाई करें।

गन्ना की खेती

- गन्ने में आवश्यकतानुसार सिंचाई कर नमी बनाये रखें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु गुड़ाई करें। यह सभी क्रियायें 15 जून (वर्षा प्रारंभ होने से पहले) कर लें।
- पेड़ी फसल में अधिक पैदावार लेने हेतु सिंचाई, उर्वरक प्रबंधन एवं निराई–गुड़ाई समय समय पर करें।
- बसंतकालीन गन्ने में सिंचाई पश्चात् 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ की दर से टापड्रेसिंग कर गुड़ाई करें।
- चोटीबेधक कीट के नियंत्रण हेतु ग्रसित नवजात पौधे को जमीन की सतह से काटकर नष्ट कर दें अत्यधिक प्रकोप की दशा में क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.5 एस.सी. के 150 मि.ली. कीटनाशक को 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से ड्रेचिंग कर सिंचाई करें।

सब्जियों की खेती

- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु मेथाइल यूजीनॉल क्यूल्योर फेरोमोन ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 की दर से लगायें।
- कद्दूवर्गीय फसलों में हरा फुदका एवं सफेद मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत 1.0 मिली. रसायन एवं तना व फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 प्रतिशत की 1.0 मिली. रसायन की मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 की दर से लगायें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु रोग के रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत 1.0 मिली. रसायन को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिए क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल में सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए ग्रसित पौधें को उखाड़कर जला दे या मिट्टी में दबा दें तथा रोग वाहक कीट को नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे0 लगायें, इसके रासायनिक

उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत 1.0 मिली0 रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम के बागों में निश्चित समय अन्तराल पर सिंचाई कर नमी बनाये रखें।
- फलों के बाग के रोपड़ हेतु मई माह में खोदे गये गढ्ढों की भराई करने के लिए ऊपर की आधी मिट्टी में गोबर की सड़ी हुई खाद को मिलाकर जमीन की सतह से 15 से 20 सेन्टीमीटर ऊपर तक भराई कर लें।
- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यू ल्योर ट्रैप 8–10 ट्रैप प्रति हे0 में 6 से 8 फिट की उचांई पर टहनियों में बांध कर लटकाए तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें तथा 20–25 दिन के अन्तराल पर ल्योर को बदलते रहें।
- आम को एकसाथ पकाने के लिए 750 पी.पी.एम. इथरेल (1.8 मि.ली./लीटर) गुनगुने पानी (52 ± 2^0 से.) के घोल में 5 मिनट तक डुबोकर तदोपरान्त छांव में सुखाने के बाद भण्डारण करें। इसी में (0.5 ग्रा./लीटर) कोर्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल मिलाने से अन्य फफूंदी भी नष्ट हो जाती है और आम अच्छा पकता है।

पशुपालन

- राष्ट्रीय पशुरोग नियंत्रण कार्यक्रम के अन्तर्गत गलाघोंटू बीमारी का टीकाकरण प्रत्येक जनपद के समस्त पशु चिकित्सालयों के माध्यम से टीकाकरण कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क कराया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- प्रजनन सम्बन्धी समस्त रोगों के निराकरण हेतु पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि हरा चारा, भूसा, पशु आहार के अतिरिक्त खनिज लवण भी अवश्य खिलायें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें, उनको 60:40 के अनुपात में हरा एवं सूखा मिलाकर ही खिलायें।
- बदलते मौसम में बाह्य एवं अन्तः परिजीवी के संक्रमण की सम्भावना प्रबल होती है। अतः पशुपालकों को सलाह दी जाती है कि निकटतम पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सा अधिकारियों की सलाह से बाह्य एवं अन्तः परिजीवी नाशक दवाओं का उपयोग करें।
- गर्मी के मौसम को देखते हुए पशुओं को छायादार स्थान पर बाधें एवं पशुओं को दिन में पर्याप्त मात्रा में पानी अवश्य पिलायें।
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय योजना अन्तर्गत मण्डल/जिला स्तर पर पशु आरोग्य मेलों का आयोजन किया जा रहा है, इन मेलों में निःशुल्क चिकित्सा, दवापान, बधियाकरण, टीकाकरण, लघु शल्य चिकित्सा, अल्ट्रासाउण्ड मशीन द्वारा गर्भ परीक्षण, पशुधन बीमा तथा पशुपालन कार्य हेतु इच्छुक पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड के अन्तर्गत पशुपालन घटक के अधीन ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ–साथ ही गोष्ठियों का आयोजन भी सम्पादित किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं0–1962 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
- राष्ट्रीय पशुधन बीमा योजना अन्तर्गत पशुपालकों को अपने पशुओं का बीमा, बीमा कम्पनी द्वारा निर्धारित दर से 85 प्रतिशत छूट पर किया जा सकता है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी या निकटस्थ पशुचिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर उठा सकते हैं।

मत्स्य पालन

- मत्स्य प्रजनकों की उचित देखभाल करें।
- भारतीय/विदेशी कार्प मछलियों का प्रजनन प्रारम्भ कर दें।
- हैचरी/हॉपा ब्रिडिंग के प्रबंधन एवं संचालन के लिए विशेषज्ञों से समय–समय पर सलाह लेते रहें।
- मत्स्य बीज संचयन से पूर्व तालाब की तैयारी जैसे–जलीय खरपतवार की निकासी, जलीय कीटों तथा अवांछित मछलियों का उन्मूलन कर लें।

- हैचरियों से स्पॉन प्राप्त कर नर्सरी तालाबों में संचयन करें।
- ग्रो आउट तालाब में फिंगरलिंग मत्स्य बीज संचयन 2000–4000 प्रति एकड़ की दर से जून के अंतिम सप्ताह में शुरू कर दें।

रेशम पालन

- अर्जुन नर्सरी उत्पादन के लिए बालू, मिट्टी एवं गोबर की खाद का मिश्रण तैयार कर पालीथीन बैग में भराई का कार्य करें।

वानिकी

- वर्षा प्रारंभ होने पर वृक्षारोपण की तैयारी करें।

राज्य आपदा प्रबंधन

- आगामी सप्ताह में तापक्रम अधिक होने की संभावना है अतः किसान भाई अपने साथ पानी लेकर चलें ताकि डिहाइड्रेशन से बचाव कर सकें।
- सुबह जल्दी या शाम को ही खेतों में काम करें। दोपहर की धूप में बाहर जाने से बचें।
- दिन भर में अत्यधिक तरल पदार्थ जैसे नींबू पानी, छाछ, शरबत, शिकंजी इत्यादि का सेवन करें।
- किसान भाई खेतों में ट्रांसफार्मर के आस–पास 10 फीट के क्षेत्रफल को निराई–गुड़ाई कर खाली एवं साफ–सुथरा रखें ताकि खेतों में आग लगने व फसल जलने से बचाये जा सके।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 19 जून, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः–

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं। क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हों तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(विनोद कुमार तिवारी)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।

14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

(**विनोद कुमार तिवारी**)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2025–26 की छठवीं बैठक दिनांक 12 जून, 2025 की उपस्थिति

1. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।
3. श्री दशरथ सिंह, सांख्यिकी अधिकारी, वन विभाग, लखनऊ।
4. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
5. डा. सुनील कुमार राय, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र एवं पशुधन विकास, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
6. श्री अमित कुमार, ओ.एस.डी, राहत आयुक्त कार्यालय, एनेक्सी।
7. मु. आरिफ, परियोजना प्रबंधक, राहत आयुक्त कार्यालय, एनेक्सी।
8. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम विज्ञान विभाग), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
9. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
10. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
11. डा. राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश।
12. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
13. श्री प्रतीक कुमार, तकनीकी अधिकारी, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, शुआट्स, प्रयागराज।
14. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ (ऑनलाइन)।